वैदिक नदियाँ एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनका महत्त्व

* पूजा जायसवाल

इस चराचर जगत में सूक्ष्म से लेकर स्थूल तक जड़ से लेकर चेतन तक समस्त समष्टियाँ एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। सृष्टि का प्रत्येक कण एक दूसरे कण के लिए अस्तित्ववान है। अकारण ही किसी एक का संवर्द्धन तथा संरक्षण दूसरे के विकास में सहायक बन जाता है। जीवन की अनुकूल परिस्थितियों के लिए पंचभौतिक संघटन में संतुलन और सामंजस्य की महती आवश्यकता है। संतुलन और सामंजस्य के अभाव में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में कहीं भी जीव सम्भव नहीं। सृष्टि को संतुलित बनाने तथा जीवन प्रदान करने में जल की महती भूमिका है इसके अभाव में जगत में कुछ भी सम्भव नहीं है। जल ही कभी हिम के रूप में वायुमण्डलीय ताप पर नियंत्रण रखता है, कभी तुषार के रूप में अन्तरिक्ष में ताप का शमन करता है। सूर्य के ताप को भी सह्य बनाने वाला कारक भी जल ही है। जलवाहिनी, जीवनदायिनी नदियाँ न केवल मनुष्य और अन्य जीवों को जीवन देती हैं अपितु पर्यावरण संरक्षण में महती भूमिका प्रदान करती हैं। मनवीय सभ्यता के विकास में नदियों की बहुत बड़ी भूमिका रही है। वास्तव में विश्व की विभिन्न सांस्कृतिक एवं भौगोलिक रचनाओं में निवास करने वाली गति और चेतना की प्राण प्रतिष्ठा का श्रेय नदियों को ही है। हमारी भारतीय संस्कृति के विकास में सिन्धु, गंगा, सरस्वती, नर्मदा आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यही कारण रहा है कि भारतीय मनीषा नदियों को अत्यन्त श्रद्धा के साथ विश्व की माता के रूप में स्वीकृत करती है और भारतीय जन–मानस उन्हें फलदायिनी देवी के रूप में प्रतिष्ठित करता है–

"आ यत् साकं यशसो वादशानाः सरस्वती सप्तधी सिन्धुमाता।"[1]

वैदिक वाङ्मय में प्रायः 31 नदियों का उल्लेख है, जिनमें से 25 नदियों के नाम ऋग्वेद में ही दिये गये हैं। ऋग्वेद के सुप्रसिद्ध नदी सूक्त में यमुना और शुतुद्रि (सतलज) के बीच सरस्वती का नामोल्लेख है। इसमें कई

* शोधच्छात्रा, संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ।

नदियों का उल्लेख है जिन्हें पूर्व से पश्चिम की स्थिति के अनुसार वर्णित किया गया है–

''इमं में गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तया र्जीकीयेशृणुह्या सुषोमया।।''[2]

''तृष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया भवेत्यात्या।
त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रुमुं मेहत्न्वा सरथं याभिरीयसे।।''[3]

भारत की नदियों में सरस्वती एक प्रमुख नदी थी। इसके अंक में आदि भारतीय सभ्यता का विकास हुआ और ऐसी परम्पराओं का आविर्भाव हुआ जो आज भी हमारे सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग है। ऋग्वेद में सरस्वती को अम्बितमे, नदीतमे, देवितमे कहा गया है–

''अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति। अप्रशस्ता इव स्मसि
प्रशस्तिमम्ब नश्कृधि।।''[4]

विशाल जल राशि युक्त विशिष्ट बल सम्पन्न तथा वृषभ के समान गर्जना करती हुयी प्रवाहित होने वाली सिन्धु नदी के प्रति वैदिक ऋषियों के हृदय में प्रचुर आकर्षण दिखाई देता है। सरस्वती एवं सिन्धु के साथ यदि पंजाब प्रान्त की पाँच नदियों को मिला दिया जाये तो सप्त सैन्धव प्रदेश की नदियों का बिम्ब उभर आता है। ये हैं– शुतुद्रि (सतलज), विपाशा (व्यास), परुष्णी (रावी), असिक्नी (चिनाव), तथा वितस्ता (झेलम), सिन्धु की पश्चिमी सहायक नदियों में रसा, कुभा (काबुल), क्रुमु (कुर्रम), गोमती (गोमल), सुसर्तु व श्वेत्या (कुभा के उत्तर), मेहत्नु (कुभा के दक्षिण), सुवास्तु (स्वात) तथा हरियूपीया के नाम उल्लेखनीय हैं। एक मन्त्र में सरस्वती की सहायक दृशद्वती तथा आपया नदी का भी उल्लेख है–

''नि त्वा दधे वर आ पृथिव्याा इतायास्पदे सुदिनत्वे अहास।
दृशद्वत्या मानुष आपयायां सरस्वत्यां रेवदग्ने दिदीहि।।''[5]

जबकि वाजसनेयि संहिता में इसकी 5 सहायक नदियों का उल्लेख मिलता है–

'पंच नघु सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधासो देशे भवत् सरित।'[6]

इसके अतिरिक्त कुभा सिन्धु की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है जिसका उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है–

मा वो रसानितभा कुभा क्रुमु र्मा वः सिन्धुर्निरीरमत्।
मा वः परि ष्ठात्सरयुः पुरीषिव्यस्मे इत् सुम्नमस्तु वः।।''[7]

गङ्गा यमुना के नामों का भी उल्लेख है किन्तु ये ऋग्वैदिक काल में वर्तमान विशिष्टता नहीं प्राप्त सकी थीं। **'उरुकक्षो न गाङ्ग्यः'**[8] इसी एक मन्त्र में गङ्गा का स्पष्ट नाम आया है। इस अंश में गङ्गातीरोत्पन्न व्यक्ति के अर्थ में प्रयुक्त गङ्ग्य शब्द से नदी का संकेत माना जा सकता है, पर यह पूर्णतया स्पष्ट नहीं है। गङ्गा से आर्यों का परिचय पीछे चलकर हुआ है इसी कारण उल्लेखों की कमी है। शतपथ बाह्मण (13.5.4.11), जैमिनीय ब्राह्मण (3.83), तैत्तिरीय आरण्यक (2.10) में गङ्गा का नाम मिलता है। यमुना नदी का नामोल्लेख ऋग्वेद, ऐतरेय बाह्मण तथा शतपथ बाह्मण के अनेक स्थल पर आता है।

नदियाँ आदिकाल से उपलब्ध जल के प्राकृतिक संसाधन के रूप में मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती रही है। इन्ही नदियों के किनारों पर समृद्ध सांस्कृतिक जीवन पल्लवित पुष्पित हुआ। यजुर्वेद में वैदिक संस्कृति का केन्द्र पूर्व की ओर अग्रसर होते हुए दिखलाई देता है। यह प्रदेश सतलज एवं यमुना का मध्यवर्ती था। पांचाल प्रदेश गङ्गा–यमुना की अन्तर्वेदी में स्थित था। वैदिक धर्म संस्कृति और दर्शन के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्नों की मीमांसा कुरु–पांचाल जनपदों के ब्रह्मवादियों के ही मध्य हुयी। जीवन और जगत की जटिलताओं का विचारपूर्ण विश्लेषण प्रायः इसी शस्यश्यामला भूमि पर हुआ।[9] सरस्वती नदी द्वारा सिंचित भूमि उर्वरा थी। इसकी घाटी में अत्यधिक मात्रा में अन्न का उत्पादन होता था–

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती[10]

परुष्णी तथा सिन्धु नदियों का प्रदेश उस समय ऊन की उपज तथा ऊनी शिल्प के लिए प्रसिद्ध था। ऋग्वेद के एक मन्त्र में मरुतों का वर्णन

परुष्णी प्रदेश में निर्मित शुद्ध ऊनी वस्त्र पहने हुए किया गया है–

उत स्म ते परुष्ण्यामर्णा वसत शुन्ध्यवः।[11]

अतएव जलवाहिनी, जीवनदायिनी नदियों के महत्त्व को वर्तमान में भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है। औद्योगीकरण, बढ़ती आबादी, जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के कारण भविष्य में सतह पर मौजूद पानी की अनुपलब्धता सबसे बड़े संकट का सबब बनने वाली है। ऐसी चिन्ताजनक परिस्थिति में नदियों का संरक्षण अत्यन्त विचारणीय विषय है। जल संरक्षण एवं सवर्द्धन के अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। इस वर्ष देश के जल सप्ताह यानी जनवरी 13–17 के समय एक अभियान **हमारा जल – हमारा जीवन** चलाया गया। बरसात के पानी को समुद्र में पहुँचाकर नष्ट होने से बचाने के लिए और इसे देश की सभी नदियों तक पहुँचाने के लिए **नदी जोड़ो** परियोजना चलायी जा रही है। नदी की स्वच्छता के लिये **'नमामि गङ्गे'** जैसी परियोजनाएँ हैं।

यद्यपि हमारा प्रशानिक तन्त्र नदियों के संवर्द्धन, संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध हो रहा है। लेकिन इस समस्या से मुक्ति पाने के लिए सबसे बड़ी जरूरत जन जागरूकता की है, क्योंकि इस चुनौती का सामूहिक एवं स्वेच्छा से मुकाबला किये बिना गङ्गा जैसी नदियाँ हमारा उद्धार नहीं कर सकती और नदियों के बिना नदियों की घाटियों में जीवन सम्भव नहीं है। अतएव इनके रक्षार्थ जो प्रयाास नहीं करता वह स्वयं के प्रति आत्मघात कर रहा है।

सन्दर्भ –

1. ऋग्वेद संहिता 7.36.6
2. वही 10.75.5
3. वही 10.75.6
4. वही 2.41.6
5. ऋग्वेद संहिता
6. वाजसनेयि संहिता 34.11

7. ऋग्वेद संहिता 5.53.9
8. वही 6.45.31
9. वैदिक साहित्य और संस्कृति का समीक्षात्मक इतिहास – प्रो0 ओम् प्रकाश पाण्डेय
10. ऋग्वेद संहिता 1.3.10
11. वही 5.52.9